भारत की पांडुलिपि विरासत पर पहला वैश्विक सम्मेलन

चर्चा में क्यों ?

- भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर भारत की पांडुलिपि विरासत पर पहले वैश्विक सम्मेलन की घोषणा।

मुख्य बिंदु :

- यह सम्मेलन 11 से 13 सितंबर 2025 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।
- इसका विषय "पांडुलिपि विरासत के माध्यम से भारत की ज्ञान की विरासत को पुनः प्राप्त करना" रखा गया है।
- यह सम्मेलन स्वामी विवेकानंद के 1893 में विश्व धर्म महासभा में दिए गए ऐतिहासिक भाषण की स्मृति में आयोजित किया जा रहा है।
- इस सम्मेलन का उद्देश्य भारत की पांडुलिपि संपदा को पुनर्जीवित करना और उसे संरक्षण, डिजिटलीकरण, अनुवाद, और शैक्षिक पाठ्यक्रमों में एकीकृत करने के लिए वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना है।
- सम्मेलन में पांडुलिपियों के संरक्षण, डिजिटलीकरण, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस और पांडुलिपि अध्ययन पर विभिन्न सत्र होंगे। साथ ही इसमे विभिन्न प्रदर्शनियां, संरक्षण तकनीकों का लाइव प्रदर्शन, और पांडुलिपि-केंद्रित स्टार्टअप्स के लिए समर्पित स्थान होंगे।

- पांडुलिपि अध्ययन में नई दिल्ली घोषणापत्र को अपनाया जाएगा और दीर्घकालिक संस्थागत संबंधों को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- **निष्कर्षतः** यह सम्मेलन भारत को एक बार फिर ज्ञान परंपराओं में एक वैश्विक विचारक के रूप में स्थापित करने का प्रयास है, जिससे भारत की पांडुलिपि संपदा को दुनिया भर में पहचान मिले।